RNI NO. : MPHIN33094

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

वर्ष- 15 वां | अंक 58 | मार्च – मई 2022

संपादक - विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रकाशक - सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुंबई
संस्थापक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

चहकती चेतना

श्री कुन्दकुन्द-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, विले पारले, मुम्बई द्वारा
पूज्य गुरुदेवश्री कानजी स्वामी की साधना भूमि तीर्थधाम सोनगढ़ में संचालित

श्री कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन विद्यार्थी गृह

विद्यार्थी गृह की विशेषतायें

- गुजरात के श्रेष्ठ विद्यालयों में से एक श्री महावीर चारित्र कल्याण रत्न आश्रम में लौकिक अध्यापन
- पूज्य गुरुदेवश्री की आध्यात्मिक स्थली में अध्ययन का अवसर
- छठवीं से दसवीं तक की अध्यापन सुविधा
- लौकिक अध्ययन के साथ जिनधर्म के दृढ़ संस्कार
- समय-समय पर विशिष्ट विद्वानों का समागम
- सर्वसुविधा युक्त विशाल संकुल
- शारीरिक स्वास्थ्य पर पूर्ण ध्यान
- सभी सुविधायें पूर्णतः निःशुल्क
- लगभग सभी खेलों की सुविधा
- धार्मिक विषयों का श्रेष्ठ विद्वानों द्वारा अध्यापन
- वर्ष में दो बार शैक्षणिक तीर्थ यात्रा
- विशाल पुस्तकालय की सुविधा
- कठिन विषयों की विशेष कक्षायें
- साप्ताहिक गोष्ठियों एवं प्रतियोगिताओं के माध्यम से व्यक्तित्व विकास
- छठवीं कक्षा में प्रवेश

प्रवेश प्रक्रिया प्रारंभ

प्रवेश फार्म जमा करने की अंतिम तिथि 31 मार्च 2022

संपर्क

श्री कहान शिशु विहार, राजकोट रोड, सोनगढ़, जि.भावनगर, सौराष्ट्र गुजरात

फोन : 02846-244510, सोनू शास्त्री-9785643277, आतमप्रकाश शास्त्री-7405439519,
विराग शास्त्री-9300642434, अनंकांत शास्त्री - 9898192106, प्रियम शास्त्री - 9887986898

आप प्रवेश फार्म हमारी वेबसाइट www.kahanshishuvihar.org से भी डाउनलोड कर सकते हैं ।

E-mail : kahanshishuvihar@gmail.com

आध्यात्मिक, तात्विक, धार्मिक एवं नैतिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

प्रकाशक : श्रीमति सूरजबेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुम्बई
संस्थापक : आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाऊन्डेशन, जबलपुर म.प्र.
संपादक : विराग शास्त्री, जबलपुर
डिजाइन/ग्राफिक्स : गुरुदेव ग्राफिक्स, जबलपुर

परमशिरोमणि संरक्षक

- श्रीमती स्नेहलता धर्मपत्नि जैन बहादुर जैन, कानपुर
- डॉ. उज्जवला शहा-पंडित दिनेश शहा, मुम्बई
- श्री अजित प्रसाद जी जैन, दिल्ली,
- श्री मणिभाई कारिया, ग्रांट रोड, मुंबई
- कु. अनन्या सुपुत्री श्री विवेक जैन बहरीन

परम संरक्षक

- श्री अनंतराय ए.सेठ, मुम्बई, श्री प्रेमचंद बजाज, कोटा
- श्रीमति आरती पुष्पराज जैन, कन्नौज उ.प्र.
- श्री श्रेणिक विनयजी लुहाडिया, वर्ली, मुंबई
- श्रीमति भारती बेन - डॉ. विपिन भायाणी, अमेरिका

संरक्षक

- श्री आलोक जैन, कानपुर
- श्री सुनील भाई जे. शाह, भायंदर, मुम्बई
- Agraeta Technik P. Ltd., Virar, Thane MH.
- श्री निमित्त शाह, कनाडा
- श्री भरत भाई टिम्बड़िया, कोलकाता/
- श्री कमलेश भाई टिम्बड़िया, राजकोट

परम सहायक :

- श्री प्रदीपजी चौधरी, किशनगढ़
- श्री सुरेश पाटोदी, कोलकाता

1	सूची	1	14	कुछ बात माता-पिताओं से...	17
2	संपादकीय	2-3	15	ये भी कमाल/छोड़ दिया संसार	18
3	हमारी ऐतिहासिक विरासत-मदुरै	4	16	लघु सत्य प्रसंग - कीमत	19
4	पंचेन्द्रिय विषयो से डरना	5	17	देखो ! कैसे बदले परिणाम	20
5	हिन्दु पुराणों में तीर्थकरों की महिमा	6	18	अब नहीं बैठूँगा	21-23
6	कविता - बात की बात	7	19	मांसाहारी या शाकाहारी कैसे पहचाने	24-25
7	पांडव बने परमात्म	8	20	सन्मति संस्कार../चहकती चेतना..	26
8	लघु कथायें - समय का दुरोपयोग	9	21	शिवपुरी में जिनमंदिर...	27
9	प्रेरक प्रसंग - नजरिया/माँ की सोच	10	22	होली हो मुनिराजों सी...	28
10	क्या आप बिस्तर पर बैठकर	11	23	जन्मदिवस	29
11	शब्दों से झांकती संस्कृति	12-14	24	श्रद्धांजलि शोक संदेश	30
12	वे कौन थे ?	15	25	हमारी ऐतिहासिक विरासत अयोध्या	31
13	क्या आपके जीवन में अंधेरा	16	26	विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियाँ	32

प्रकाशकीय व संपादकीय कार्यालय
"चहकती चेतना"
सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम,
फूटाताल, लाल स्कूल के पास, जबलपुर म.प्र. 482002
9300642434, 7000104951
chehaktichetna@yahoo.com

मुद्रण व्यवस्था
स्वस्ति कम्प्यूटर्स, जबलपुर

चहकती चेतना के पूर्व प्रकाशित संपूर्ण अंक प्राप्त करने के लिये लॉग ऑन करें
www.vitragvani.com

सदस्यता शुल्क - 500/- रु. (तीन वर्ष हेतु)
1500/- रु. (दस वर्ष हेतु)

सदस्यता राशि अथवा सहयोग राशि आप "चहकती चेतना" के नाम से ड्राफ्ट/चैक/मनीआर्डर से भेज सकते हैं। आप यह राशि कोर बैंकिंग से "चहकती चेतना" के बचत खाते में जमा करके हमें सूचित सकते हैं।
पंजाब नेशनल बैंक, फुहारा चौक, जबलपुर
बचत खाता क्र.- 1937000101030106
IFS CODE : PUBN0193700

संपादकीय

जिनशासन के संस्कारों के कैसे आगे बढ़ायेंगे हम ?

हर प्रवचन में, संतों के उपदेशों में हमें जैन होने का गर्व अनुभव कराते हुये कहा जाता है कि असंख्यात जन्मों के पुण्य के फल में हमें महान जैन शासन मिला है। जैन होना विश्व का सबसे बड़ा सौभाग्य है। वीतरागी देव-शास्त्र-गुरु का मिलना किसी चमत्कार से कम नहीं है। दिगम्बर मुनिराजों की संसार में विरक्ति हमें आश्चर्यकारी लगती है। इसी जैनशासन का आश्रय करके हम जन्म-मरण का नाश करके मुक्ति का अनंत सुख पा सकते हैं। जब हम ये बातें सुनते हैं तो हमें गर्व की अनुभूति होती है। हम बच्चों को धर्म के संस्कार देने की बात करते हैं परन्तु दूसरी ओर हमारी कथनी और करनी जमीन आसमान का अंतर दिखाई देता है। हर बात पाङ्गशाला की पुस्तकों से नहीं सीखी जा सकती, हमारे परिवार का वातावरण और परिवार में होने वाली घटनायें बच्चों की जीवंत पाठशाला होतीं हैं। जितना बच्चे पढ़कर नहीं सीखते, उससे अधिक हमारे जीवन से सीखते हैं। हमारे परिवारों में होने वाले हर दिन के प्रसंग, बातें बच्चों में संस्कार निर्माण का बड़ा माध्यम होतीं हैं।

मंदिरों में, प्रवचनों में हम शरीर और आत्मा भिन्नता की, संसार की नश्वरता, संसार में सुख नहीं, धन पुण्य के उदय से आता है, शरीर की रचना हमारे करने से नहीं बल्कि कर्म उदय से होती है, संयोगों का, प्रसिद्धि का, सफलता का मिलना पुण्य उदय से होता है ऐसी बातें सुनते और करते हैं परन्तु दूसरी ओर हमारे जीवन में इसका पूरा उल्टा व्यवहार देखने में आता है। शरीर के प्रति सावधानी, पिकनिक, टूर, आउटिंग, होटलिंग, बढ़िया फैशनेबल कपड़े, धन के पीछे पागलपन, धन की महिमा, प्रसिद्धि और पद के लिये धार्मिक संस्थाओं में होते षडयंत्र, धार्मिक आयोजनों में उत्कृष्ट स्तर की मायाचारी हमारी रियल तस्वीर दिखाती है। आज फेसबुक, इंस्टाग्राम आदि सोशल मीडिया में सबसे ज्यादा संदेश जन्मदिन और एनीवर्सरी की शुभकामनाओं के होते हैं। प्रत्येक बड़े परिवार ने अपने पारिवारिक सदस्यों का एक व्हाट्सएप ग्रुप बना रखा है। इन सबमें शरीर, पद, प्रतिष्ठा, संयोगों की महिमा के संदेश होते हैं और इन सब मैसेज में एक बाद स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही है कि वह है पारिवारिक मर्यादाओं का सत्यानाश।

पति-पत्नी के नितांत व्यक्तिगत मर्यादापूर्ण रिश्ते को बाजारु बना दिया गया है। एनीवर्सरी के दिन सोशल मीडिया पर पत्नी के द्वारा लिखी गई शुभकामनाओं के साथ - **'दुनिया के सबसे प्यारे पति'** (ये कुशील की भाषा है) और पति के द्वारा लिखा गया **'मेरी प्रिय पत्नी'**। क्या इन संदेशों को सोशल मीडिया में देना जरुरी है? पत्नी आपकी और पति आपका तो अपने घर में ही ये तमाशा कर लें। बाजारु बनने की क्या आवश्यकता है? एक समय ऐसा था कि घर के बड़ों के सामने उनका सम्मान करते हुये पति और पत्नी आपस में बात तक नहीं करते थे और आज बेशर्म होकर बड़ों के सामने गले और कमर में हाथ डालकर, अंग प्रदर्शन वाले कपड़े पहनकर बेशर्मी से फोटो खिचाईं जातीं हैं और एनीवर्सरी पर बाकायदा घर में केक काटने जैसे संस्कृति का नाश करने वाले आयोजन होते हैं। मानो विवाह करके जीवन का महान कार्य संपन्न किया हो और

तो और किसी महिला के प्रेग्नेंट होने पर बढ़े हुये पेट के साथ फोटो पोस्ट करने को शान समझा जाने लगा है और एक समय सामाजिक मर्यादाओं के ध्यान में रखते हुये कहीं भी जाते समय पेट को छिपाने का प्रयास होता था। आप मातृत्व की अनूभूति कीजिये न। हम कहते हैं कि हमें संस्कार देना है तो जन्म लेना कलंक है शास्त्रों की इन बातों का क्या होगा ?

जिनशासन की पवित्रता पर सबसे ज्यादा चोट पहुँचाई है प्री वेडिंग फोटो शूट ने। शादी के पहले होने वाले पति-पत्नी के वीडियो बनाने के चलन ने बेशर्मी की पराकाष्ठा पार कर ली है। दूर वादियों में, पार्कों, होटलों में सारी मर्यादाओं को तोड़कर वीडियो बनाया जाता है और सगाई या शादी में बड़े गर्व से उसे दिखाया जाता है और उसी परिवार के सारे बच्चे - बड़े- बूढ़े उसे देखकर यही सीखते हैं कि संस्कारों का सत्यानाश कैसे किया जाता है। आश्चर्य यह है कि इस पतन के कार्य में लौकिकजनों के साथ शास्त्र सुनने वाले और सुनाने वाले भी शामिल हो गये हैं। यदि आपको वाकई में जिनशासन के संस्कारों को अपनी आगे वाली पीढ़ी में बढ़ाना है तो हमें अनेक बातों पर ध्यान देना होगा -

1. प्री वेडिंग कल्चर कम से कम अपने परिवार में बंद करायें और अपने परिचितों को भी इससे बचने की सलाह दें।
2. जन्मदिन और एनीवर्सरी जैसे लौकिक प्रसंगों को सादगी से सेलिब्रेट करें। संभव हो तो तीर्थयात्रा, जिनमंदिर दर्शन, विधान पूजन, दान आदि की मुख्यता रखें।
3. अपने पिकनिक, टूर, पर्यटन के अंतरंग क्षणों को सोशल मीडिया पर पोस्ट करने से बचें।
4. गर्भावस्था के समय अपना अधिकांश समय जिनधर्म से जुड़कर प्रवचन, पूजन, स्वाध्याय आदि में व्यतीत करें, फोटो सेशन सौभाग्य नहीं है। फिल्मी अभिनेत्रियों ने अपना शील ही बेच दिया है तो उनकी नकल क्यों करना ?
5. बच्चों के सामने धन कमाने की ज्यादा बातें न करें। हाँ! उन्हें धन की उपयोगिता और मितव्ययिता अवश्य बतायें।
6. बच्चों के सामने किसी दूसरे के धन-वैभव की प्रशंसा न करें, बल्कि जीवन संतोष से जिया जाये - इसके संस्कार दें।
7. आप स्वयं ऐसे कपड़े पहनें जिससे भारतीय संस्कारों को बल मिले और बच्चों को भी स्लीवलेस, टाईट जींस, बहुत छोटे कपड़े न दिलायें अन्यथा आप कुशील की अनुमोदना ही करेंगे। (द्रोपदी और सीता के पूर्व भव की कहानी पढ़ लीजिये।)
8. कभी भी आलू, प्याज, अदरक, गाजर,मूली आदि जमीकंद, ब्रेड, जंक फूड आदि अभक्ष्य का सेवन न करें।
9. किसी भी बुरी परिस्थिति में घबरायें नहीं, न ही क्रोध करें और किसी भी सफलता पर अधिक उत्साहित न हों, सामान्य ही रहें। आपका यह व्यवहार बच्चों को सुख-दुख में समान रहने की शिक्षा देगा।
10. हर संभव प्रयास करें कि जिनमंदिर प्रतिदिन जायें, किसी कारणवश न जा पायें तो घर पर ही देव-शास्त्र-गुरु का स्मरण अवश्य करें। इससे बच्चों को मौन प्रेरणा मिलेगी।
11. जिनमंदिर में बच्चों के हाथ से छोटीसी राशि दान पेटी में अवश्य डलवायें अथवा कोई भी बोली लेते समय बच्चों का नाम अवश्य बुलवायें, इससे दान के संस्कार बलवान होंगे।
12. शरीर की सुन्दरता के लिये हिंसात्मक मेकअप के सामान उपयोग न करें।
13. संभव हो तो घूमने के लिये ऐसे स्थान को चुनें जहाँ जिनमंदिर अवश्य हो और वहाँ अवश्य जायें।

हमारे पूर्वजों के संस्कारों से आज महान जिनधर्म के संस्कार हमारे जीवन में है, यदि हम यह विरासत अपनी आगामी पीढ़ी में ट्रांसफर नहीं कर पाये तो यह हम सबका सामूहिक अपराध होगा।

जिस पंथ चले भगवंत वही आचरिये। **- विराग शास्त्री संपादक**

मदुरै

तमिलनाडु प्रान्त का मदुरै शहर अपने प्राचीन मंदिरों, स्मारकों, ऐतिहासिक महत्व और विभिन्न धर्मों से जुड़े इतिहास के लिये विख्यात है। मदुरै शहर के पास स्थित प्राकृतिक गुफायें हैं, एकांत में स्थित इन गुफाओं में जैन साधु कठोर तप किया करते थे। सामान्य जैन यहाँ पर आकर आचार्यों और मुनिराजों से आध्यात्मिक शिक्षा प्राप्त करते थे। ये विद्यालय के समान थीं और इन्हें तमिल भाषा में पल्ली कहा जाता था। इन विद्यालयों के संरक्षण के लिये राजा, श्रेष्ठियों और समाज से दान प्राप्त होता था। इन गुफाओं में तमिल ब्राह्मी शिलालेख प्राप्त हुये हैं ये जैन धर्म की प्राचीन धरोहर हैं। इनमें से कई शिलालेख ईसा मसीह के पूर्व के हैं। ईसा के कई शताब्दियों पूर्व यहाँ जैन धर्म ही प्रचलित था। यहाँ शासन करने वाले पांड्य राजा जैन थे। बाद में इन राजाओं ने जैन धर्म को छोड़ दिया और अन्य मत के मानने वाले लोगों के दबाब में आकर जैन धर्म के मानने वाले लोगों को बहुत प्रताड़ित किया गया। जैन और बौद्ध धर्म के मंदिरों, स्मारकों और प्रतिमाओं को अन्य धर्म में परिवर्तित कर दिया गया।

पांडी कोविल - यह प्रतिमा तमिलनाडु के मदुरै जिले के पांडी कोविल में स्थित है। वर्तमान में पांडी कोविल एक हिन्दू मंदिर है। प्रचलित कथा के अनुसार पांडी मुनि तमिल महाकाव्य के पांड्य राजा नेदुचेलियन हैं। इनके साथ एक और प्रतिमा विराजमान है जिसके सामने मुर्गों, बकरियों की बलि दी जाती है। इस देवता को शराब और सिगरेट भी चढ़ाई जाती है।

सच क्या है - वास्तव में पांडी कोविल के मुख्य देवता पांडी मुनि नहीं बल्कि एक तीर्थंकर हैं। यह प्रतिमा लगभग 150 वर्ष पूर्व करूर से आये कुछ लोगों को मिली थी जिसे इन लोगों ने मंदिर बनाकर विराजमान कर दिया। बाद में इस जैन प्रतिमा को हिन्दू प्रतिमा में परिवर्तित कर दिया गया और इनके सिर पर मुकुट, भौंहे और मूंछ भी बना दीं गईं। इसे मात्र कल्पना से बनाकर यहाँ कब्जा करके जैन संस्कृति को मिटाने का प्रयास किया गया है। इसी जैन प्रतिमा के सामने पशुओं की बलि दी जाती है। तमिलनाडु प्रांत के पुरातत्व विभाग के इतिहासकार और शिलालेख विशेषज्ञ सी. शंतलिंगम और वी. वेदाचलम भी इस बात पर सहमत हैं कि यह जैन प्रतिमा है। उन्होंने इस बात का उल्लेख मदुरै की पर्यटक पुस्तक में भी किया है।

पंचेन्द्रिय
विषयों से डरना

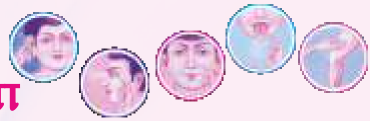

आओ भाई आओ बहना, मान लो तुम सब मेरा कहना।।
मान लो तुम सब मेरा कहना, पंचेन्द्रिय विषयों से बचना।। टेक ।।

एक-एक इन्द्रिय दुखदाई,
जिनने भोगा मौत ही पाई।
इनसे अतः दूर ही रहना,
मान लो तुम सब मेरा कहना।।

देखो हाथी कैसा प्यारा।
किन्तु स्पर्शन के लोभ ने मारा।
उससे मिला कूप में गिरना।
मान लो तुम सब मेरा कहना।।

मछली कैसी प्यारी लगती।
उसको रसना इन्द्रिय ठगती।
कांटा खाय तड़पकर मरना।
मान लो तुम सब मेरा कहना।।

भौंरा फूलों पर मंडराता।
और उसी में बन्द हो जाता।
घ्राण इन्द्रिय वश मृत्यु पाना।
मान लो तुम सब मेरा कहना।।

हिरन उछलता फिरता है।
सुन संगीत आप बंधता है।
कारण मात्र कर्ण वश होना।
मान लो तुम सब मेरा कहना।।

दीपक पर पतंगा गिरता।
और शीघ्र जिन्दा ही जलता।
कारण मात्र चक्षु वश होना।
मान लो तुम सब मेरा कहना।।

उदाहरण ये एक-एक के।
किन्तु हम वश हैं पाँचों के ।
सोचो हमें कौन दुख भरना।
मान लो तुम सब मेरा कहना।।

- डॉ. वीर सागर जैन, दिल्ली

हिन्दु पुराणों में तीर्थंकरों की महिमा

हमारे तीर्थंकरों की महिमा हिन्दू पुराणों में गाई गयी है। जानिये कुछ उदाहरण -

स्कन्द पुराण में कहा है -

सर्वज्ञः सर्वदर्शी च सर्वदेव नमस्कृतः। छत्रत्रयाभिसंयुक्तां पूज्यां मूर्तिम सौ वहन ।।
आदित्य प्रमुखा सर्वे बद्धाञ्जलय ईदृशं। ध्यायन्ति भावतो नित्यं यदङिध्रयुग नीर जलम् ।।
परमात्मानमात्मानं लसत्केवल निर्मलम् । निरंजनं निराकारं ऋषभन्तु महाऋषिम् ।।

श्री ऋषभनाथ सर्वज्ञाता, सर्वदृष्टा और सर्वदेवों से पूजित हैं। उस निरंजन, निराकार, परमात्मा, केवलज्ञानी, तीन छत्र युक्त, पूज्य मूर्तिधारक, महाऋषि ऋषभनाथ के चरण युगल को हाथ जोड़कर हृदय से आदित्य आदि सुर नर ध्यान करते हैं।

नागपुराण में कहा है -

अष्टषष्टिषु तीर्थेषु यात्रायां यत्फलं भवेत् । आदिनाथस्य देवस्य स्मरणेपि तद् भवेत् ।।

जो फल 68 तीर्थों की यात्रा करने से होता है वह फल आदिनाथ भगवान के स्मरण करने से होता है।

शिवपुराण में भगवान ऋषभदेव के बारे में कहा -

कैलाश पर्वतरम्ये वृषभोऽयं जिनेश्वरः । चकार स्वावतारं च सर्वज्ञः सर्वगः शिवः।। 59 ।।

केवलज्ञान द्वारा सर्वव्यापी कल्याणस्वरूप सर्व ज्ञाता यह ऋषभनाथजी ने कैलाश पर्वत से मुक्ति पाई। जिन और अर्हत् ये शब्द जैन तीर्थंकर के लिये ही कहे जाते हैं।

नागपुराण में कहा है -

अकारादि हकारान्तं मूर्द्धाधोरेफ संयुतम् । नाद विन्दु कलाक्रान्तं चन्द्रमण्डल सन्निभम् ।
एतद्देवि परं तत्वं यो विजानाति तत्वतः, संसार बन्धनं छित्वा स गच्छेत्परमां गतिम् ।।
दशभिर्भोजितैर्विप्रः यत्फलं जायते कृते। मुनेरर्हतसुभक्तस्य तत्फलं जायते कलौ।।

जिसका प्रथम अक्षर अ है और अंतिम अक्षर ह है और उसके ऊपर आधा रेफ है तथा चन्द्र बिन्दु विराजमान है, ऐसे अर्हं को जो कोई सच्चे रूप से जान लेता है, वह संसार बंधन को काटकर परमगति को चला जाता है। कलयुग में दस ब्राह्मणों को भोजन कराने का जो फल होता है वह फल अर्हंत के भक्त एक मुनि अर्थात् एक जैन साधु को भोजन कराने से होता है।।

प्रभास पुराण में कहा है -

पद्मासन समासीनः श्याममूर्तिर्दिगम्बरः। नेमिनाथः शिषोथैवं नाम चक्रेस्य वामनः।।
खकलिकाले महाघोरे सर्वपाप प्रकाशकः। दर्शनात्स्पर्शनादेव कोटि यज्ञ फल प्रदः।।

वामन ने पद्मासन से बैठे हुये श्याम मूर्ति और दिगम्बर नेमिनाथ का नाम शिव रखा, यह नेमिनाथ महाघोर कलिकाल में समस्त पापों का नाश करने वाले हैं और इनके दर्शन और स्पर्श करने से मात्र से करोड़ों यज्ञ कराने का फल प्राप्त होता है।

बात की बात

सिनेमा में गाने की बात होती है।
रसोई में खाने की बात होती है।
ध्यान से सुना करो मेरे दोस्तो।
प्रवचन में आत्मा पान की बात होती है।।

स्कूल में पढ़ाई होती है।
साड़ी पर कढ़ाई होती है।
छोड़ दो इस दुख देने वाले राग को
क्योंकि राग में लड़ाई होती है।।

दवाई में मात्रा की बात होती है।
ट्रेन में यात्रा की बात होती है।
मन लगाकर पूजन करो भव्य जीव
पूजा में भी मुक्ति की बात होती है।

नीम कभी मीठ्ठी नहीं होती।
नदी कभी जूठी नहीं होती।
कुशास्त्रों की बात नहीं करते हम
पर जिनवाणी की बात कभी झूठी नहीं होती।

जो हमसे बड़े हों उन्हें आदर से आप कहते हैं।
जिसके डसने से आदमी मर जाये उसे सांप कहते हैं।
जिनागम के सार को जरा ध्यान से सुनो मेरे मित्र
मिथ्यात्व को जैन दर्शन में सबसे बड़ा पाप कहते हैं।।

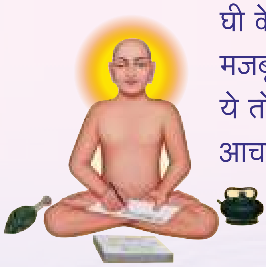

घी के स्वाद को तौला नहीं जा सकता।
मजबूत ताले को तोड़ा नहीं जा सकता।
ये तो कदाचित संभव है परन्तु
आचार्य कुन्दकुन्द की महिमा को तौला नहीं जा सकता।।

- डॉ. वीर सागर जैन, दिल्ली

■ श्रीमति रचना जैन रांची एवं श्री उत्सव जैन रांची ने 11000/- रु. प्रदान की।

पांडव बने परमात्मा

पांचों पाण्डव भगवान नेमिनाथ प्रभु के समवशरण में उनके मुख से अपने पूर्व भवों के वर्णन को सुनकर बहुत प्रसन्न हुये।

पांचों पाण्डवों ने भगवान नेमिनाथ को नमस्कार करते हुये कहा - हे प्रभो! हमने अनंत काल दुख सहन करते हुये व्यतीत किये। संसार में सभी भीषण अन्याय, कर्म उदय की पीड़ाओं से दुखी हैं और इन अनंत काल के भयंकर दुःखों से मुक्त होने के लिये आपकी शरण ही लेना उचित है। आपकी पवित्र वाणी ही हमें आत्मा के वैभव की पहचान कराती है।

इसके बाद पाण्डवों ने दिगम्बर मुनि दीक्षा लेने की भावना प्रगट की और अपने योग्य पुत्रों को राज्य सौंपकर जिनदीक्षा धारण कर ली। पाण्डवों के साथ कुन्ती, सुभद्रा, माद्री और द्रोपदी ने भी राजमती आर्यिका के पास निवेदन किया और केशलोंच करते हुये आर्यिका दीक्षा ले ली।

इसके बाद पांचों पाण्डव घोर तप करने लगे। वे पांच महाव्रत, पांच समिति पूर्वक पांचों इन्द्रियों को वश में करके आत्मा में लीन हो गये। केशलोंच करना, नग्न रहना, स्नान नहीं करना, पृथ्वी पर सोना, दांत साफ नहीं करना, दिन में एक बार खड़े - खड़े आहार करना, आदि 28 मूलगुणों का पालन करने लगे। उन्होंने कई दिन तक 6 दिन उपवास करके मात्र एक दिन आहार लिया। इस तरह वे मुनिधर्म का पालन करते हुये शत्रुंजय पर्वत पर आकर ध्यान में लीन हो गये। एक दिन वहाँ क्रूर चित्त वाला दुर्योधन का भांजा कुर्मधुर जिसका दूसरा नाम यवर्धन भी था, वह वहाँ आया और उसने पांचों पाण्डवों को वहाँ देखा। उसने सोचा कि ये लोग मेरे मामा दुर्योधन को मारकर यहाँ पर आकर ध्यान करने का नाटक कर रहे हैं। बदला लेने का यह अच्छा अवसर है। मैं इनको मारकर अपने मामा का बदला लूँगा। ये अभी ध्यान में हैं और युद्ध भी नहीं कर सकेंगे।

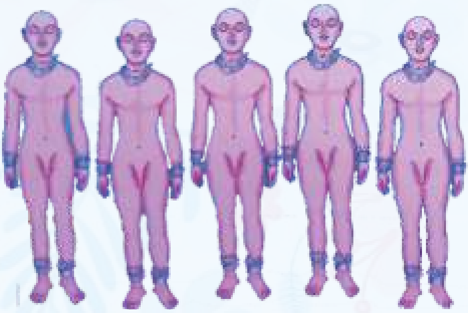

ऐसा सोचकर उसने लोहे के आभूषण तैयार करवाये और उन आभूषणों को आग में बहुत गरमकर लाल कर लिया और इतने गरम आभूषण पाण्डवों के हाथ, पैर और सिर में पहना दिये। उनका शरीर लकड़ी के समान जलने लगा और उनके शरीर से धुंआ निकलने लगा। पाण्डव इस भयंकर उपसर्ग को शांति से सहन करने लगे और अडिग होकर आत्मा में लीन हो गये। अल्पकाल में युधिष्ठिर, अर्जुन और भीम ने समस्त कर्मों का नाश कर सुखमयी सिद्ध अवस्था प्राप्त की। देवों ने आकर तीन पाण्डवों का निर्वाण महोत्सव मनाया और उन्हें पता चला कि दोनों छोटे भाई नकुल और सहदेव आत्म साधना में कुछ कमी रह जाने से सर्वार्थसिद्धि स्वर्ग में अहमिन्द्र हो गये। वे वहाँ 33 सागर तक स्वर्ग के सुख का उपभोग कर भविष्य में पुनः मनुष्य होंगे और आत्मसाधना कर मोक्ष प्राप्त करेंगे।

समय का दुरुपयोग

एक राजा को मालूम चला कि उनके नगर का एक सेठ जो कि उनका मित्र था, वह बहुत परेशान है और उस पर बहुत कर्ज हो गया है। राजा ने उसे बुलाया और चार कमरों की चाबी देते हुये कहा कि इन चारों कमरों में सामान है और तुम हर कमरे से सामान निकालने के लिये एक-एक घण्टा मिलेगा। इस समय में जितना सामान ले जा सकते हो ले जाओ। सेठ पहले कमरे में पहुँचा तो वहाँ एक ओर रत्न भरे हुये थे और वहीं दूसरी ओर हजारों नये - नये आकर्षक खिलौने थे। उनमें से कोई नाच रहा था तो किसी खिलौने से रोने की आवाज निकल रही थी। सेठ उन्हें देखने में मग्न हो गया और देखते-देखते एक घण्टा समाप्त हो गया और सेठ को उस कमरे से बाहर निकाल दिया गया। अब सेठ दूसरे कमरे में पहुँचा तो वह कमरा सोने से भरा हुआ था। उस कमरे में सुन्दर स्वर्ग की देवियों के समान नर्तकी नृत्य कर रहीं थीं। सेठ उनके सुन्दर रूप देखने में लीन हो गया और एक घण्टा व्यतीत हो गया। सेङ्ग को वहाँ से भी बाहर निकाल दिया गया। सेठ तीसरे कमरे में गया। यह कमरा चांदी से भरा हुआ था उसमें बहुत सुन्दर पलंग पर मुलायम गद्दे बिछे हुये थे। सेठ उस पर लेट गया और सेठ थका हुआ तो था ही और ठंडी हवा मिलने से उसे गहरी नींद आ गई और एक घण्टा समाप्त हो गया। उसे वहाँ से बाहर निकाल दिया गया। दुखी होकर वह चौथे कमरे में गया वहाँ लोहे के बहुत सारे सामान पड़े हुये थे। वह उन्हें उठाने लगा। लोहे का सामान बहुत भारी होने से उसे उठाने में बहुत दिक्कत होने लगी और एक लोहे का सामान उसके पैर पर गिर गया और सेठ खाली हाथ उसस कमरे से बाहर निकल जोर-जोर अपनी मूर्खता पर रोने लगा।

इसी प्रकार संसारी प्राणी अपने जीवन के बचपन का समय जो कि रत्न के समान है, जवानी का समय जो सोने के समान, प्रौढ़ अवस्था का समय जो कि चांदी के समान है और बुढ़ापे का समय जो कि लोहे के समान इन सबको व्यर्थ बरबाद कर देता है और खाली हाथ दुखी होते हुये मर जाता है और दुर्गति प्राप्त करता है।

- कोलकाता निवासी श्रेष्ठी एवं अध्यात्म रुचि संपन्न व्यक्तित्व श्री सुरेन्द्रजी पाटोदी ने विद्वान प्रोत्साहन योजना और चहकती चेतना के संवर्धन हेतु 31000/- रु. राशि प्रदान की।
- बांसवाड़ा निवासी श्री धनपालजी ज्ञायक ने चहकती चेतना हेतु 11000/- रु. की प्रदान की।

नजरिया

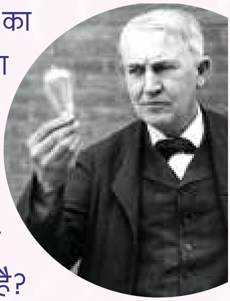

महान अमेरिकी वैज्ञानिक थॉमस अल्वा एडिसन ने बल्ब का आविष्कार किया था। 27 जनवरी 1880 को को बल्ब को पेटेंट मिला था। इसके पहले एडिसन ने बल्ब बनाने के लिये कई सालों में लगभग 1000 असफल प्रयास किये। एडिसन ने बल्ब का फिलामेंट बनाने के लिये अपने प्रयासों में दो हजार अलग-अलग सामानों का प्रयोग किया था। सफल होने के बाद उनसे एक पत्रकार ने पूछा कि हजार बार फेल होने के बाद सफल होने पर आपको कैसा लग रहा है? इस पर एडिसन बोले मैं हजार बार फेल नहीं हुआ बल्कि मैंने लगभग 1000 ऐसे कारणों की खोज कर ली है जो ये सिद्ध करते हैं कि इनसे काम नहीं होगा।

माँ की सोच

एडिसन जब स्कूल में पढ़ते थे तो उन्हें टीचर ने एक नोट दिया और कहा कि इसे अपनी माँ को दे देना। एडिसन ने वह नोट अपनी माँ नैंसी मैथ्यू इलिएट को दिया तो उसे पढ़कर वे रोने लगीं। उस नोट में एडिसन को मंद बुद्धि कहकर स्कूल से निकालने की जानकारी दी गई थी। एडिसन ने माँ के रोने का कारण पूछा तो माँ ने हंसते हुये कहा कि ये तो खुशी के आंसू हैं क्योंकि इस नोट में लिखा है कि आपका बेटा बहुत बुद्धिमान है और हमारा स्कूल लो स्टेण्डर्ड का है। साथ ही हमारे टीचर इतने काबिल नहीं हैं कि आपके बेटे को पढ़ा सकें इसलिये इसे एडिसन को आप स्वयं पढ़ायें।

एडिसन यह सुनकर बहुत खुश हुये और उन्होंने मन लगाकर घर पर ही अपनी माँ से पढ़ाई करना शुरु कर दिया। बाद में एडिसन ने अपनी मेहनत और प्रतिभा से विश्व को आम जीवन में काम आने वाले 1000 से ज्यादा आविष्कार दिये। 1093 आविष्कार तो उन्होंने पेटेंट कराये थे।

बहुत वर्षों बाद जब एडिसन महान वैज्ञानिक बन गये और उनकी माँ का स्वर्गवास हो गया उन्हें माँ की आलमारी में माँ की एक डायरी में वही पुराना स्कूल का नोट मिला जिसमें लिखा थ आपका बच्चा मंद बुद्धि है इसे स्कूल न भेजें। इस घटना का उल्लेख करते हुये एडिसन ने लिखा कि एक महान माँ ने अपनी महान सोच से एक मंद बुद्धि बच्चे को सदी का एक महान वैज्ञानिक बना दिया।

चहकती चेतना

क्या आप भी बिस्तर पर बैठकर या टी.वी. देखते हुये भोजन करते हैं....

कई घरों में बेडरूम में टीवी लगा होता है, कई लोग बिस्तर पर बैठकर टीवी देखते हुये नाश्ता या भोजन करते हैं लेकिन ऐसा करना धार्मिक दृष्टि से गलत है ही, स्वास्थ्य की दृष्टि से भी हानिकारक है।

बेंगलुरु के जिंदल नेचरक्योर की चीफ मेडीकल ऑफिसर डॉ. बबीना एन एम कहती हैं - बिस्तर पर बैठकर टीवी या मोबाइल देखते हुये भोजन करने से नींद से जुड़ी समस्यायें आने लगतीं हैं। जमीन पर बैठकर पालथी मारकर भोजन करना सबसे बेहतर तरीका है। इससे भोजन अच्छी तरह डाइजेस्ट होता है। भोजन के वक्त पीठ सीधी रखना चाहिये। टीवी या मोबाइल देखते हुये लोगों में निश्चिंतता का भाव होता है, ज्यादा भोजन हो जाता है और पता भी नहीं चलता। रात्रि में 11 बजे से सुबह 4 बजे तक का समय सोने के लिये सबसे बेहतर माना जाता है, इससे स्वास्थ्य से जुड़ी समस्यायें कम होतीं हैं।

आयुर्वेद में घूम-घूमकर खाने और पानी पीने को भी गलत माना गया है। घूमते हुये खाना खाने से ध्यान भटकता है और लोग चबाकर भोजन नहीं करते और पाचन शक्ति पर बुरा असर पड़ता है।

भोजन के टुकड़े बिस्तर पर या जमीन पर गिरने से बैक्टीरिया और जर्म्स का जन्म हो जाता है। इनकी संख्या तेजी से बढ़ती है और चीटीं आदि जीव पैदा हो जाते हैं जिससे उनकी हिंसा हो जाती है।

सुखासन या पद्मासन मुद्रा में भोजन करने के अनेक फायदे हैं। इस अवस्था में बैठने से पीठ और कमर सीधी रहती है। पेट के अंदर का हिस्सा सही स्थिति में होता है। इस दौरान पेट दबता नहीं है और भोजन आसानी से पच जाता है।

भोजन करते समय मौन या कम से कम बोलना चाहिये। बातें करते समय दिमाग यह नहीं सोच पाता कि कितना भोजन किया है और कितने की जरूरत है। इससे मोटापे की समस्या होती है। भोजन पर ध्यान न होने से उसमें यदि कोई जीव या अशुद्धि हो तो पता नहीं चलता।

शब्दों से झांकती संस्कृति

अनेक विद्वानों ने जैन संस्कृति को अत्यंत प्राचीन सिद्ध किया है। हमारे द्वारा दैनिक जीवन में उपयोग किये जाने वाले अनेक शब्दों का जैन संस्कृति से गहरा सम्बन्ध है

1. **छानबीन** - जैन लोग अनिवार्य रूप से सभी पेय पदार्थों पानी, दूध, घी, तेल को छानकर काम में लेते हैं और सभी खाद्य पदार्थों दाल, चावल आदि को बीनकर काम में लेते हैं। उनकी रसोई में निरन्तर छानबीन चलती रहती है। यह शुद्धता का आधार है।
2. **खटकर्म** - आजकल यह शब्द गलत कामों के लिये प्रयोग किया जाता है। जैसे वह व्यक्ति खटकर्म अर्थात् बुरे कर्म करता है। मूलतः यह शब्द जैन संस्कृति का है। जैन लोग नित्य ही षट आवश्यक कर्मों का पालन करते हैं, उनके बिना एक दिन भी व्यतीत नहीं करते। यह उसी का रूप है - षट्कर्म खटकर्म
3. **अन्थऊ** - यह शब्द बुंदेलखण्ड में प्रयोग किया जाता है। यह शब्द संस्कृत के 'अनस्तमित' से बना है, इसका अर्थ है - सूर्य अस्त होने के पूर्व किया जाने वाला भोजन, शाम का भोजन।
4. **चेला** - चेल अर्थात् वस्त्र और जो वस्त्र और जो वस्त्र - सहित हो उसे चेला कहते हैं। जैन संस्कृति के अनुसार गुरू वही हो सकता है जो पूर्णतः निर्वस्त्र, नग्न दिगम्बर हो। वस्त्रधारी कोई भी हो, गुरू नहीं हो सकता, चेला ही हो सकता है।
5. **निकम्मा** - जैन संस्कृति में सिद्धात्मा, शुद्धात्मा या मुक्त आत्मा को प्राकृत भाषा में 'णिकम्मा या निकम्मा' कहा जाता है क्योंकि वे सम्पूर्ण कर्मों से रहित हो जाते हैं।
6. **लुच्चा** - जैन संस्कृति में साधुओं को अपने हाथों से अपने सिर और दाढ़ी के बाल को तोड़ना होता है इसे केशलोंच कहा जाता है, वे किसी कैंची आदि उपकरण का प्रयोग नहीं करते, अतः उन्हें प्राकृत भाषा में लुच्चा कहा जाता है। बाद में इस शब्द का दुरुपयोग प्रारंभ हो गया।
7. **शायद** - जैन लोग स्याद्वादी होते हैं, वे सदा ही प्रत्येक वाक्य में 'स्यात्' निपात का प्रयोग करना पसंद करते हैं। शायद शब्द इसी 'स्यात् ' का विकृत रूप जान पड़ता है।

8. **पूजा** - प्रोफेसर सुनीति कुमार चटर्जी ने लिखा है कि पूजा शब्द मूलतः द्रविड भाषा के पूजे शब्द से आया है और उसका उसका विस्तार है 'पू' 'जे'; जिसने 'पू' अर्थात् पुष्प / राग को 'जे' अर्थात् जीत लिया वही पूजा के योग्य है। तात्पर्य यह हुआ कि जो वीतरागी हो गया वही पूज्य हो सकता है, रागी पूज्य नहीं हो सकता।

9. **डिमरी** - डिमरी एक जाति का नाम है जो प्रायः पहाड़ी क्षेत्रों में पाई जाती है। विद्वानों ने बताया कि इसका डिमरी नाम जैनों के दिगम्बरी शब्द से विकसित हुआ है।

10. **ओझा** - जैन संस्कृत ये एक जाति का नाम है जो प्रायः बिहार में पाई जाती है। विद्वानों के शोध के अनुसार इनके झा एवं ओझा नाम जैनों के 'उवज्झाय' शब्द से विकसित हुये हैं।

11. **शर्मा** - यह एक जाति विशेष का उपनाम है। शर्मा नाम जैनों के 'श्रमण' या 'शर्मन' शब्द से विकसित हुआ है।

12. **जर्मनी** - जर्मनी देश के एक प्रोफेसर ने विश्व संस्कृत सम्मेलन में बताया कि लोगों को 'श' को 'ज' बोलने की आदत है, जैसे कि विसडम - विजडम, ट्रांसिटर - ट्रांजिस्टर आदि अतः वास्तव में उनके देश का असली नाम जर्मनी नहीं है अपितु शर्मनी है और वहाँ के निवासियों का असली नाम जर्मन नहीं शर्मन है, क्योंकि यहाँ श्रमण संस्कृति का प्रचलन था और दिगम्बर मुनि यहाँ विहार करते थे।

13. **अंडमान और निकोबार** - प्रोफेसर राजाराम ने सिद्ध किया है कि अंडमान और निकोबार द्वीप जैन संस्कृति के बड़े केन्द्र थे और उनका असली नाम 'आदमन्न और नग्गावरम्' था, क्योंकि यहाँ बड़ी संख्या में आत्मा का मनन करने वाले नग्न दिगम्बर मुनि निवास करते थे।

14. **बृजभूमि** - कहा जाता है कि यहाँ प्राचीन समय में बहुत 'प्रव्रज्या' अर्थात् दीक्षा होतीं थीं, बड़े-बड़े राजा-महाराजा सब कुछ त्यागकर नग्न दिगम्बर मुनि हो जाते थे, अतः यह प्रदेश बृजभूमि के नाम से विख्यात हुआ।

15. **एशिया** - एक सम्मेलन में एक विद्वान ने बताया कि इतिहास में एशिया का कोई अर्थ नहीं मिलता। प्राचीन समय में जैन संस्कृति का व्यापक प्रभाव होने से यहाँ के लोग 'असिआउसा' बहुत बोलते थे, एशिया नाम उसी से पड़ा होगा।

16. **लुच्चा** - जैन संस्कृति में गणधर को गणेश कहा जाता है।

17. **खमा -** राजस्थान और गुजरात में बोला जाने वाला यह क्षमा या क्षमावाणी से प्रभावित है।

18. **युसूफ / जोसेफ -** मैसूर विश्व विद्यालय के प्रोफेसर एन. सुरेश कुमार ने अपने शोध पत्र जैन धर्म की विश्व व्यापकता में लिखा है कि ऋषभ शब्द के 'ऋ', 'ष' और 'भ' क्रैस्त धर्म में प्राकृत व्याकरण के अनुसार क्रमशः 'य' 'स' 'भ' हो जाते हैं, अतः यसफ, युसूफ, योसेफ, जोसेफ आदि सभी ऋषभ शब्द के रूप हैं और अल्हा को अर्हत् या अर्हं से, ईरान को अर्हन् से, मक्का को मोक्ष से, चीन को जिन से इत्यादि माना जा सकता है।

20. **रहीम -** जैन संस्कृति का 'ह्रीं' मंत्र ही रहीम के रूप में विकसित हो गया होगा, ऐसा लगता है।

21. **करीम -** जैन संस्कृति का 'क्लीं' मंत्र ही करीम के रूप में विकसित हो गया होगा, ऐसा लगता है।

- डॉ. वीर सागर जैन, दिल्ली

हमारे नये संरक्षक

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर की गतिविधियों से प्रभावित होकर कोलकाता निवासी श्री भरतभाई टिम्बड़िया एवं श्री कमलेशभाई टिम्बड़िया राजकोट ने संरक्षक पद स्वीकार किया है। श्री भरतभाई टिम्बड़िया श्री कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट मुम्बई के ट्रस्टी हैं। स्वाध्याय की अगाध रुचि के साथ आप दोनों भाई विगत कई वर्षों से समाज की अनेक धार्मिक सामाजिक गतिविधियों में सहयोग प्रदान करते रहे हैं।

आपके संरक्षक पद स्वीकार करने से निःसन्देह संस्था को समाजोपयोगी कार्य में संबल प्राप्त होगा। संस्था आपका हार्दिक आभार ज्ञापित करती है।

21000/- विख्यात समाजसेवी एवं जिनशासन सेवा में सदा समर्पित **श्री प्रदीपजी कुसुमजी चौधरी, किशनगढ़ राज.** ने चहकती चेतना के संवर्द्धन हेतु प्रदान किये।

वे कौन थे ?

1. वे कौन थे जो कुण्डलपुर की पावन भूमि से मोक्ष गये ?
उत्तर - श्रीधर केवली।

2. वे कौन थे जिन्होंने संस्कृत में अभिषेक पाठ लिखा है ?
उत्तर - माघनन्दी मुनिराज।

3. वे कौन थे जो इस युग में सबसे पहले मोक्ष गये ?
उत्तर - अनंतवीर्य केवली।

4. वे कौन थे जिन्होंने स्वयं के घर में चोरी करने वाले वाले चोरों की सहायता की ?
उत्तर - पण्डित बनारसीदासजी।

5. वे शलाका पुरुष कौन थे जिनका जन्म जेल में हुआ ?
उत्तर - श्रीकृष्ण।

6. वे कौन थे जिन्होंने विवाह के दूसरे दिन ही दीक्षा ले ली ?
उत्तर - जम्बुकुमारजी।

7. वे कौनसे तीर्थंकर थे जिन्हें दर्पण में अपना ही मुख देखकर वैराग्य हो गया था ?
उत्तर - तीर्थंकर शान्तिनाथ।

8. वे कौन थे जिन्होंने झांसी की रानी लक्ष्मीबाई को सेना के छः माह के वेतन के लिये रुपये दान दे दिये थे ?
उत्तर - शहीद अमरचंदजी बांठिया।

9. वे कौन थे जिन्होंने अपना एक पैर सुमेरु पर और दूसरा पैर मानुषोत्तर पर रखा ?
उत्तर - विष्णुकुमार।

10. वे कौन थे जो तीन दिन तक एक पैर पर खड़े होकर तप करते रहे ?
उत्तर - मुनि सुकुमाल।

11. वे कौनसे आचार्य हैं जिन्होंने आत्मा की 47 शक्तियों की चर्चा लिखी है ?
उत्तर - आचार्य अमृतचन्द्र देव। समयसार के परिशिष्ट के रूप में।

12. वे कौन थे जिनकी समाधि भूमि कुद्राद्रि पर्वत पर है ?
उत्तर - आचार्य कुन्दकुन्द।

क्या आपके जीवन में अंधेरा आना वाला है ....

क्या आप भी सुबह उठते ही सबसे पहले मोबाइल देखते हैं ये आदत आपको बहुत मंहगी पड़ सकती है। मोबाइल देखने की लत के कारण अनेक लोग गंभीर बीमारियों का शिकार हो रहे हैं। दिल्ली के अपोला स्पेक्ट्रा हॉस्पिटल के डॉक्टर कार्तिकेय संगल के अनुसार रात भर आपकी आंखें आराम कर रहीं होतीं हैं। सुबह उङ्गते ही जब आप मोबाइल स्क्रीन देखते हैं तो आंखों पर दबाब पड़ता है, आंखें चौंधिया जातीं हैं और लम्बे समय तक सुबह उठते ही मोबाइल देखने से स्वास्थ्य पर खराब असर पड़ना प्रारंभ हो जाता है। यदि आप लम्बे समय तक आंखों पर जोर डालकर मोबाइल की स्क्रीन देखते हैं तो स्किन खिंचने लगती है और उम्र से पहले चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ने लगतीं हैं। लगातार अधिक मोबाइल देखने से आंखें लाल होना, ड्राइनेस, जलन, इंफेक्शन, सिरदर्द, सर्वाइकल, ब्लडप्रेशर जैसी समस्यायें शुरु हो जातीं हैं। हमारी आंखें एक निश्चित समय तक ही फोकस कर सकतीं हैं, लगातार अधिक मोबाइल देखने से काम पर फोकस कम होने लगता है, पढ़ाई में मन लगता और बैचेनी बढ़ने लगती है। ऑनलाइन क्लासेस के कारण अब ये समस्या बच्चों में भी होने लगी है।

आंखों को ब्लू स्क्रीन से कैसे बचायें - आजकल लोग घंटों लेपटॉप या मोबाइल पर काम करते हैं और ब्रेक लेने का ध्यान नहीं रहता। इस कारण आंखें ड्राई हो जातीं हैं, जिससे आखों में इंफेक्शन होने की संभावना बढ़ जाती है। इसलिये आपको काम या पढ़ाई के हर दो घंटे के बाद बीच में ब्रेक लेते रहना चाहिये और अपनी आंखों को आराम देना चाहिये। अक्सर देखा जाता है कि बच्चों की ऑनलाइन क्लासेस के समय दो कक्षाओं के बीच में मिलने वाले ब्रेक में बच्चे कोई गेम खेलने लगते हैं या वीडियो देखने लगते हैं जबकि वह समय आंखों को आराम देने का है। एक मिनिट में आखों की पलकों को 20 बार झपकायें।

अंधेरे में मोबाइल कभी न देखें। आंखों को स्वस्थ रखने के लिये आंवला, सेब, अंगूर, मौसंबी जैसे पौष्टिक फल खायें ये आंखों के लिये बेस्ट एंटी ऑक्सिडेंट होते हैं। भोजन शुद्ध और पौष्टिक लें और नींद पर्याप्त लें।

कहीं ऐसा न हो कि धन कमाने के लिये रात में देर तक काम करने के लोभ में यही धन आपको बीमारियों के इलाज में खर्च करना पड़े।

कुछ बात माता-पिताओं से...

1. बच्चा एक वर्ष का या हो एक दिन का उसे बच्चा या नासमझ मत समझें। उसके सामने ऐसे बुरे काम मत करिये जिसे आप बड़े बच्चों के सामने न करते हों।
2. छोटे से छोटा बच्चा सब समझता है, सिर्फ बोल नहीं सकता।
3. बच्चा रो रहा है न कहकर जिस माँ को यह कहना आ गया कि बच्चा क्या कह रहा है समझना वही माँ बच्चे को अच्छी तरह समझती है।
4. बच्चा कितना भी तुतलाकर बोले, कितना ही बिगड़कर बोले, कितना ही अशुद्ध बोले, आप सदा शुद्ध बोलिये। बच्चे भी कुछ समय बाद सही बोलना सीख जायेंगे।
5. छोटे सा छोटा बालक आपसे हर समय कुछ सीखता है इसलिये बच्चे के सामने ऐसा कोई मत कीजिये जिसे आप नहीं चाहते कि बच्चा आपके सामने करे। उदाहरण के लिये आप चाहते हैं कि बच्चा आपका कीमती सामान न फेके तो आपको चाहिये कि बच्चे के सामने केले का छिलका भी लापरवाही न फेंके। बच्चा आपका कहा हुआ नहीं करता मात्र आपके किये हुये की नकल करता है।
6. जो बच्चा नहीं खेलता तो समझना चाहिये कि उसे कोई रोग है।
7. बच्चा जन्म से सत्यवादी होता है क्योंकि उसके पास ऐसी कोई बात या भेद नहीं होता जिसे वह छिपा सके। परिवार और समाज का वातावरण उसे झूठ बोलना सिखाते हैं।
8. किसी को बच्चे को अयोग्य समझना हमारी अयोग्यता है। किसी बच्चे को मूर्ख, गधा, उल्लू कहना कहने वाले के संस्कार बताता है।
9. बच्चा जन्म से निर्विकार होता है इसलिये वह नग्न होने पर भी शर्म नहीं करता। शर्म, विकार, संकोच संसारी जीवों की संगति का असर है।
10. बालक निर्मोही होता है वह सोने के हार और रस्सी दोनों को समान ही समझता है।
11. बालक जब अंधेरे से या अकेले में रहने से डरने लगे तो समझना चाहिये उसके साथ कुछ गलत हुआ है।
12. जिनमंदिर में जाकर बच्चे के नाम से दान करवाईये, उसके हाथ से दान पेटी में राशि डलवाईये। इससे उनमें दान देने के संस्कार आते हैं।
13. जो खिलौने ज्ञान में वृद्धि न कर सकें ऐसे खिलौनों पर कभी रुपये बरबाद नहीं करना चाहिये। बच्चों को कभी हिंसात्मक खिलौने बंदूक आदि नहीं देना चाहिये इससे हिंसा के संस्कार पड़ते हैं।
14. बच्चों शारीरिक दण्ड मारना पीटना नहीं दें। उन्हें भावनात्मक रूप से समझाने का प्रयास करें

जैसे आज मैं आपसे बात नहीं करूँगा, आज मैं आपके साथ भोजन नहीं करूँगी, आज मैं आपको अपने साथ नहीं ले जाऊँगी इत्यादि।

- साभार - माता-पिताओं से नामक पुस्तक

- शेष अगले अंक में

ये भी कमाल है

भाभीजी! आज जब मैं विधान करवा रहा था तो आप मंदिर आईं थीं। परन्तु मंदिर में शांति से आईं पर भगवान के दर्शन करते करते आप अचानक भागते हुये कहाँ चलीं गईं थीं? और 15 मिनिट बाद फिर मंदिर आ गईं। अरे क्या है पण्डितजी! आज विधान में बैठने की जल्दी में आज दूध गैस पर ही रखकर आ गई और जब भगवान की सफेद प्रतिमा देखी तो अचानक गैस पर रखा दूध याद गया, बस घर पर गैस बंद करने गई थी वरना नुकसान हो जाता।

मैं विधान में 'जिन दर्शन से निज दर्शन पाना' भक्ति गाते हुये सोच रहा था कि जिनमंदिर में जिनेन्द्र भगवान की प्रतिमा अपने आत्मस्वरूप को याद करने के लिये स्थापित की गई थीं आज इन्हें दूध याद आ गया। जैसी सोच वैसे परिणाम।

- विराग शास्त्री

छोड़ दिया संसार

राजा अजितवीर्य ने जब आचार्य व्रजनंदी की अमृतमयी वाणी सुनी तो उन्हें संसार - भोगों से वैराग्य हो गया। उन्होंने आचार्य से निवेदन करते हुये कहा - हे मुनीश्वर! मुझे जैनेश्वरी दीक्षा देकर मेरा जीवन सफल बनाइये। आचार्य ने दीक्षा देकर उन्हें अध्ययन और चिन्तन के लिये एकान्त वन प्रान्त में भेज दिया। जब महलों में रानियों को मालूम चला तो वे घबराकर रोने लगीं और अपने प्रिय राजा को ढूंढने के लिये जंगल चलीं गईं। राजा को मुनि अवस्था में देखकर उनके चरणों में गिर पड़ीं। फिर बोलीं - तुम्हारे सिर पर भार, कैसे बैठे भाड़ पर।

राज्य नारी परिवार छोड़ा कौन अधार पर।।
यह सुनकर विरागी मुनिराज ने उत्तर दिया -
जिनके सिर पर भार, वे डूबे मंझधार में।
हम उतरे भव पार, झोंक भार को भाड़ में।।

कीमत

जैसे ही प्रभा मंदिर के स्वाध्याय से घर पहुँची तो देखा कि गैस पर रखा दूध उफनकर बाहर आ रहा था और बहू अपने बेटे को स्कूल को तैयार करने में लगी थी। बहू को डांटते हुये बोली - पूरा घर बरबाद कर दोगी क्या? पूरा दूध उफनकर बाहर आ गया और महारानी को चिंता ही नहीं है। बहू सफाई देते हुये बोली - मम्मीजी रानी को स्कूल के लिये तैयार करने में ध्यान ही नहीं रहा।

तो ध्यान रखा करो न। दूध बाद में गरम कर लेतीं, कौनसा धरती का विनाश हो रहा था, पता नहीं क्या सीख कर आईं हैं मायके से।

लेकिन मम्मी ....

लेकिन-वेकिन कुछ नहीं, हर बात में बहस मत किया करो। थोड़ा ध्यान से काम किया करो। आज का पूरा दिन ही खराब कर दिया।

क्या हुआ प्रभा ? सुबह-सुबह स्वाध्याय से आकर बहू पर क्यों चिल्ला रही हो? - प्रभा के पति प्रकाश ने अपने कमरे से बाहर निकलते हुये पूछा।

आप भी देख लीजिये, आपकी लाडली बहू की लापरवाही से पूरा दूध बरबाद हो गया। प्रभा ने मुंह बनाते हुये कहा।

प्रकाश चश्मा उतारते हुये बोले - दूध ही तो बरबाद हुआ है, आत्मा तो नहीं। मेरा मतलब दूध की बरबादी से 100 रु. का ही तो नुकसान हुआ है परन्तु तुम्हारे परिणाम खराब होने से पूरा आत्मा का नुकसान हो गया। दूध तो दुबारा भी आ सकता है पर जिन परिणामों से कर्म बन्ध हो गये वे......अब तुम तय कर लो कि दूध कीमती है या परिणाम ?

प्रकाश की बात सुनकर प्रभा उन्हें एकटक देखती रह गई।बहू गैस साफ करते हुये मंद मंद मुस्करा रही थी।

कथा सुनो पुराण की : देखो! कैसे बदले परिणाम का शेष भाग

नागश्री (द्रोपदी) का जीव अनेक पर्यायों की भयंकर पीड़ा भोगने के बाद आर्यिका होकर तप किया। अनेक पर्यायों में द्रोपदी का जीव मेरी माता, बहन, पत्नी, पुत्री हुआ, इसी कारण इस भव में भी मुझे द्रोपदी से मोह हुआ।

देखो! परिणामों की विचित्रता। कुछ समय पहले तक रूप में आसक्त कीचक कुछ समय बाद भगवान बन गया और मुनिहत्या के फल में द्रोपदी ने भयंकर पाप के उदय को भोगा। इसी द्रोपदी के जीव ने बाद में आर्यिका के व्रत अंगीकार किये और महान सतियों ने द्रोपदी का नाम शामिल हो गया।

देखो ! कैसे बदले परिणाम

प्राचीन समय में एक विराट नगर था। वहाँ राजा विराट राज्य करते थे। उनकी रानी का नाम सुदर्शना था। यहीं जुआ में हार जाने के कारण पाँचों पाण्डव एक वर्ष का अज्ञातवास का समय व्यतीत कर रहे थे। अपनी पहचान छुपाकर युधिष्ठिर पण्डित बनकर, भीम भोजन बनाने वाले रसोईया बनकर, अर्जुन नृत्यांगना बनकर और नकुल-सहदेव घोड़ों की देखभाल करने वाले बनकर रह रहे थे और द्रोपदी मालिन बनकर सावधानी से अपना समय व्यतीत कर रहे थे।

एक बार राजा विराट का साला कीचक अपनी बहन सुदर्शना से मिलने आया। वह चूलिका नाम के राज्य का राजा था। कीचक ने जब द्रोपदी की सुन्दरता देखी तो वह उस पर मोहित हो गया और उसे पाने के लिये परेशान करने लगा। द्रोपदी जब अधिक परेशान हो गई तो उसने अपने देवर भीम से कीचक की शिकायत की। भीम द्रोपदी से कीचक को अपने कमरे में बुलाने को कहा। द्रोपदी का इशारा पाकर कीचक द्रोपदी के कमरे में आ गया।

वीर भीमसेन उस कमर मे पहले से द्रोपदी की साड़ी पहनकर बैठे हुये थे। काम-वासना की पीड़ा में अंधे कीचक ने भीमसेन को द्रोपदी समझकर उसके कंधे पर हाथ रखा तो भीम ने दोनों हाथों से उसका गला पकड़ा और वहीं जमीन पर गिरा दिया, पैरों से मसला, मुक्कों से बहुत मारा। कीचक को अपनी करनी पर बहुत पश्चाताप हुआ। उसे पाप का फल दिखाई देने लगा और यह विचार करते - करते वैराग्य हो गया। कीचक ने तत्काल रतिवर्धन नाम के मुनिराज से मुनिदीक्षा ले ली और जंगल में ध्यान में लीन हो गये। कीचक को ध्यान में मग्न देखकर जंगल का यक्ष देव विचार करने लगा अभी कुछ समय पहले यह द्रोपदी के रूप पर आसक्त था और अचानक इसे वैराग्य हो गया। कमाल है। उसने कीचक की परीक्षा लेने के लिये कीचक को द्रोपदी का रूप दिखाया, राग की बातें की और मधुर संगीत सुनाया परन्तु जगत को देखने व सुनने के लिये कीचक मुनि मानो अंधे और बहरे हो गये थे। कुछ समय घोर तप से कीचक को केवलज्ञान हो गया। यक्ष ने उन्हें नमस्कार कर क्षमायाचना की। तब कीचक भगवान ने अपनी केवलज्ञानमयी वाणी से द्रोपदी के पूर्व भव बताते हुये कहा -

पूर्व पर्याय में मैं कुमार देव, अर्जुन का जीव, धनदेव मेरे पिता और द्रोपदी का जीव नागश्री मेरी माता के रूप में थे। नागश्री ने एक बार मुनिराज को आहार में जहर देकर मार डाला। मुनिहत्या के पाप के फल में नागश्री (द्रोपदी) तिर्यंच की पर्याय में गई और भयंकर दुख सहन किये। मैंने मरकर अनेक भवों के बाद उत्तम कुल में जन्मा, पर श्रावक नहीं बन पाया। बाद में विनयदत्त के नाम के मुनिराज के आहार की अनुमोदना के फल में मैं कीचक के रूप में पैदा हुआ।

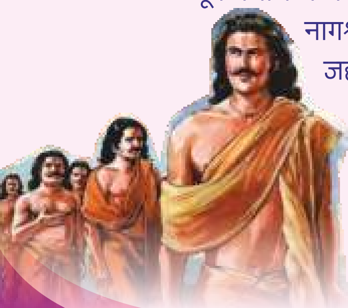

अब नहीं बैठूँगा

पापा! चाचा की शादी में घोड़े पर मैं बैठूँगा..।

पापा! चिन्तन तो मामा की शादी में भी घोड़े पर बैठा था इस बार घोड़े पर मैं बैठूँगा..।

पापा! मनन तो जयपुर में हाथी पर भी बैठा था।

कब ?

याद करो, जब हम लोग चाचा के साथ जयपुर घूमने गये थे और वहाँ के आमेर किले में तुम हाथी पर बैठे थे और मुझे बुखार था तो मैं नहीं बैठा था।

तो ये तुम्हारी गल्ती है, मैंने कब मना किया हाथी पर बैठने से ?

कुछ भी हो, इस बार घोड़े पर मैं ही बैठूँगा।

नहीं... चाचा की शादी में घोड़े पर मैं ही बैठूँगा।

शांत रहो। शादी में घोड़े पर न चिन्तन बैठेगा और न मनन।पापा ने समझाते हुये कहा।

पर क्यों ?

क्योंकि इस बार शादी में घोड़ा ही नहीं आ रहा।

पर क्यों पापा ?

मैंने ही मना किया है।

आपने.... तो क्या चाचू की शादी नहीं हो रही ?

शादी तो हो रही है पर घोड़ा नहीं आयेगा।

फिर चाचू क्या चलकर आयेंगे ?

नहीं जीप वाली बग्घी पर। बच्चो! आपने तो पढ़ा ही है कि किसी भी जीव को कष्ट देना हिंसा है। तो क्या हम हाथी, घोड़े, ऊंट पर बैठकर हिंसा का पाप नहीं करते।

पर पापा! वो सवारी के ही काम आता है। चिन्तन ने अपना तर्क दिया।

आता था अब नहीं। पहले के समय में कहीं भी दूर जाने के लिये या युद्ध आदि में हाथी, घोड़ा, उंट को सवारी के रूप में उपयोग में लेते थे क्योंकि उस समय कार, बाइक नहीं थे पर अब इसकी क्या आवश्यकता ?

पर पापा.... मनन ने मुंह बनाते हुये कहा।

पहले मेरी बात ध्यान से सुनो। ये सभी जंगली जानवर हैं। हर प्राणी को स्वतंत्र रहना पसंद है। जैसे आप को बंधन पसंद नहीं है वैसे ही किसी भी प्राणी को बंधन पसंद नहीं है। हाथी को समूह में अपने परिवार के साथ रहना ही पसंद है। हाथी का शिकार करने वाले हाथी के बच्चे को जाल में फंसाते हैं अपने मित्र को फंसा देखकर उसके और भी दोस्त उसे बचाने आते हैं तो शिकारी उनमें एक-दो बच्चों को मार डालते हैं। फिर नुकीले बाण से उसके शरीर में छेदकर, उसे बांधकर, भूखा रखकर उसे ट्रेनिंग देते हैं। बेचारे हाथी को मजबूर होकर भोजन और अपने प्राणों की रक्षा के लिये ट्रेनर की हर इच्छा पूरी करना पड़ता है। हाथी को कभी भी भरपेट भोजन नहीं मिलता। हाथी के महावत हाथी के पैरों में मोटी लोहे की सांकल बांधकर रखते हैं, उसकी पीठ पर पालकी बांधते हैं, उस पर मोटे गद्दे रखकर रस्सी से बांधते हैं। इन रस्सियों से उसके शरीर पर घाव बन जाते हैं और हम अपने थोड़े से मजे के लिये उस पर बैठ जाते हैं।

पापा! ये तो बात हमें तो पता ही नहीं थी और क्या घोड़े, ऊंट के साथ भी ऐसा करते हैं ?

हाँ। ये लोग घोड़े और उंट को भी बहुत परेशान करते हैं। घोड़े की नाक में नकेल बांध देते हैं, उसके मुंह में रस्सी के साथ लोहे के रिंग भी होते हैं जिससे वह ढंग से भोजन नहीं कर पाता। जब किसी की बारात में लेकर जाते हैं तो उसकी आंखों के बाजू में एक परदा लगा देते हैं जिससे वह मात्र सामने देख पाता है साइड में नहीं और आपको शादी में जो घोड़े का डांस अच्छा लगता है ना, तो घोड़े को डांस सिखाने के लिये गरम राख पर खड़ा करते हैं जब उसके पैर जलने लगते हैं तो वह उछलता है इस तरह उसे नाचना सिखाते हैं। ऐसी ही यातनायें ऊंट को देते हैं और जब यह जानवर बूढ़े हो जाते हैं तो उसे मार दिया जाता है।

ओह हो.... पापा! यह तो बहुत तकलीफ देने वाला काम है।

पर पापा! जब वो हमारे काम आते हैं तो हम उनको रुपये भी देते हैं जिससे उन्हें भोजन मिलता है।

रुपये जानवरों के मालिक को मिलते हैं जानवरों को तो भरपेट भोजन भी नहीं मिलता।

पर पापा! इसमें हमारी नहीं इन जानवरों के मालिक की गल्ती है उनका ही पाप है। मनन ने बात बनाते हुये कहा।

पर इसमें हमारी अनुमोदना हो गई ना। इसलिये जानवरों पर होने वाले अत्याचारों का पाप हमें भी लगेगा। वैसे ही ये जानवर किसी पाप के उदय से तिर्यंच बने और हम उन पर और अत्याचार करें यह शर्म की बात है।

पर पापा...! बिना घोड़े के बारात अच्छी नहीं लगती। चिन्तन ने उदास होकर कहा।

किसी को पीड़ा पहुँचाकर आनंद लेना अच्छी बात नहीं। क्या घोड़ा नहीं होगा तो क्या शादी नहीं होगी ? और हमने जीप वाली बग्घी की अरेंज की है न। उसमें दोनों बैठ जाना।

पापा! आप सही कह रहे हैं। ऐसा आनंद किस काम का, जो दूसरों के दर्द देने पर मिलता हो।

पापा! आज से हम संकल्प लेते हैं कि हम कभी किसी भी जानवर की सवारी नहीं करेंगे, अपनी शादी में भी नहीं। हा हा हा हा।

वाह मेरे प्यारे बच्चो! आप लोग समझ गये बस यही बहुत बड़ी बात है।

थैंक्यू पापा! हमें पाप से बचाने के लिये।

कोलकाता में जिनमंदिर का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

समयसार : कहान शताब्दी समारोह वर्ष के अंतर्गत कोलकाता के पुद्दोपुकुर में स्थित श्री दिगम्बर जिनमंदिर सोलहवाँ वार्षिकोत्सव सांनद आयोजित हुआ। दिनांक 26 दिसम्बर से 02 जनवरी 2022 तक समयसार कलश मण्डल विधान का आयोजन किया गया।

विधान की सम्पूर्ण विधि विधान पण्डित संजय शास्त्री, कोटा, श्री विराग शास्त्री और पण्डित अशोकजी उज्जैन द्वारा करवाये गये।

मांसाहारी या शाकाहारी- कैसे पहचानें ?

तिर्यंच गति में दो प्रकार के जानवर होते हैं। शाकाहारी और मांसाहारी । आप नीचे दिये गये लक्षणों से जान सकते हैं कि कौनसे जानवर शाकाहारी हैं और कौनसे मांसाहारी ?

जिन जीवों की आंखों की रचना लंबाई लिये हुये है वे सब शाकाहारी हैं। जैसे हिरण, गाय, बकरी और जिन जीवों की आंखों की बाहर की रचना गोल है वे सब मांसाहारी हैं जैसे कुत्ता, बिल्ली, शेर आदि। ये जानवर अंधेरे में भी देख सकते हैं।

शाकाहारी जीवों के नाखून चौड़े और चपटे होते हैं, इनके खुर होते हैं इनके पैरों से चलते समय आवाज आती है। जैसे - गाय, घोड़ा, गधा, ऊंट आदि। मांसाहारी जीवों के नाखून नुकीले होते हैं और इनके पंजे होते हैं, पंजे गद्देदार होते हैं। चलते समय इनके पैरों से आवाज नहीं आती, इस कारण वे शिकार को आसानी से पकड़ लेते हैं। जैसे- शेर, बिल्ली, कुत्ता।

जिन जीवों को पसीना आता है वे सब शाकाहारी होते हैं। जैसे - घोड़ा, गाय आदि। मांसाहारी जीवों का पसीना नहीं आता और वे प्राकृतिक रूप से अपनी जीभ निकालकर लार टपकाते हुये हांफते रहते हैं। इस प्रकार वे गर्मी को शांत करने का प्रयास करते हैं।

शाकाहारी जानवर ओंठो से पानी को खींचकर पी लेते हैं और उनके पानी में आवाज भी नहीं होती, मांसाहारी जानवर जीभ निकालकर आवाज करते हुये पानी पीते हैं।

मांसाहारी के दांत नुकीले होते हैं जिससे वे अपने भोजन को मांस को फाड़कर खा सकें। इनकी दाढ़ नहीं होती वे सीधे मांस को निगल लेते हैं, इनके दांत एक बार गिरने के बाद दुबारा नहीं आते और शाकाहारी के दांत सपाट होते हैं, भोजन को चबाकर खाते हैं और एक बार दांत गिरने के बाद दुबारा दांत आ जाते हैं।

शाकाहारी प्राणी के बच्चे जन्म के तुरन्त बाद आंखें खोल लेते हैं और मांसाहारी प्राणियों के बच्चे जन्म के कुछ दिन बाद आंखें खोलते हैं।

शाकाहारी जीवों की आतों की लम्बाई उनके शरीर से आठ से दस गुना बड़ी होती है और मांसाहारी जीवों की आतों की लम्बाई कम होती। इसका कारण मांस आंतों में लम्बे समय तक न रहे।

शाकाहारी हरी घास, पत्ती आदि भोजन को आसानी से पचा लेते हैं जबकि मांसाहारी हरी घास आदि का नहीं पचा सकते।

शाकाहारी प्राणी रात में एक जगह पर बैठकर सोते हैं और दिन भर चलते रहते हैं। मांसाहारी प्राणी रात्रि में चलते फिरते हैं और दिन में प्रायः सोते रहते हैं।

शाकाहारी प्राणी अधिक समय तक भूखे रह सकता और भूखे रहने पर किसी को नुकसान नहीं पहुँचाते। मांसाहारी को भूख सहन नहीं होती और भूखे रहने पर दूसरे जीव को मारकर खा जाते हैं।

शाकाहारी की सांस लेने की गति धीमी होती है और ये लम्बी आयु वाले होते हैं। मांसाहारी की सांस लेने की गति बहुत तेज होती है और ये अधिक आयु वाले नहीं होते ।

शाकाहारी को अपने बच्चों से बहुत प्रेम होता है वह उनकी सुरक्षा के लिये प्रयास करते हैं। मांसाहारी में संवेदनायें नहीं होतीं हैं और भूख लगने पर अपने बच्चों को भी खा जाते हैं।

और अंत में एक और बात

ये कैसे पहचानेंगे कि कौन तिर्यंच गति का जीव अण्डा देता है और कौनसा बच्चे ?

जिनके कान बाहर दिखाई देते हैं वे सब बच्चे देते हैं और जिन जीवों के कान बाहर दिखाई नहीं देते हैं वे अंडे देते हैं। गाय, खरगोश, घोड़े आदि बच्चे पैदा करते हैं और छिपकली, सांप आदि अंडे।

चोर कौन ?

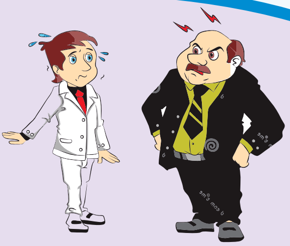

विनीत! तुम कल फोटो कॉपी (ZEROX) कराने गये थे. मैंने तुम्हें 20 रुपये दिये थे।

कितने की फोटो कॉपी हुई थी? सर!10 रुपये की ।

बाकी 10 रुपये वापस क्यों नहीं किये?

सर! मैं आज वापस करने ही वाला था। कल लेट हो गया था।

लेट हो गया कि नीयत खराब हो गई। चोर कहीं के। दुबारा ध्यान रखना। ईमानदारी से काम करोगे तो प्रमोशन मिलेगा और बेईमानी से काम करोगे तो कहीं काम नहीं कर पाओगे।

लेकिन सर...!

लेकिन वेकिन कुछ नहीं। सफाई मत दो और सुनो! सीए के पास जाकर उनका समय लो। टैक्स की सेटिंग के लिये मीटिंग करना है।

विनीत अच्छी तरह जानता था कि टेक्स की सेटिंग करने का मतलब टेक्स चोरी करने का तरीका। सीए अपनी कला से बताता था कि सरकार से कैसे कमाई छुपाई जाती है और टेक्स कम से कम कैसे हो सकता है, उसे समझ नहीं आ रहा था कि चोर मैं हूँ या सेठ जी।

सन्मति संस्कार संस्थान के भवन का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

शैक्षणिक नगरी कोटा में स्थित सन्मति संस्कार संस्थान के नवीन भवन का द्वितीय वार्षिकोत्सव 29 जनवरी से 31 जनवरी 2022 तक सानंद संपन्न हुआ। इस अवसर पर 3 दिनों में 3 लघु विधान संपन्न किये गये। इस अवसर पर डॉ. मनीष शास्त्री, मेरठ, पण्डित जयकुमारजी कोटा, श्री विराग शास्त्री जबलपुर के प्रत्यक्ष स्वाध्याय का लाभ प्राप्त हुआ। समयसार संगोष्ठी के माध्यम से पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, देवलाली, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित खेमचंदजी शास्त्री उदयपुर, डॉ. दीपकजी शास्त्री जयपुर आदि विद्वानों का ऑनलाईन माध्यम से लाभ प्राप्त हुआ। कार्यक्रम में ओजस्वी कवि पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री के संचालकत्व में आध्यात्मिक कवि सम्मेलन का आयोजन हुआ। सम्पूर्ण कार्यक्रम श्री विराग शास्त्री के निर्देशन में पण्डित अशोकजी उज्जैन एवं पण्डित अभिनयजी शास्त्री जबलपुर के द्वारा संपन्न किया गया। इस कार्यक्रम में ध्वजारोहणकर्ता श्री सुरेन्द्रजी श्री ज्ञानचंदजी जैन परिवार कोटा, पण्डित श्री कमलजी बोहरा, मुम्बई से श्री वीनूभाई शाह मुम्बई, श्री मणिभाई कारिया, श्री नवीनभाई मेहता उपस्थित रहे। कार्यक्रम में श्री चेतन जयकुमारजी जैन एवं संस्थान में अध्ययनरत बच्चों का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

चहकती चेतना कलेण्डर का प्रकाशन

सम्पूर्ण दिगम्बर जैन समाज की एक मात्र बाल युवा पत्रिका चहकती चेतना का वार्षिक तिथि केलेण्डर प्रकाशित हो गया है। इस आकर्षक रंगीन केलेण्डर में प्रत्येक पेज पर प्रासंगिक बाल मन को लुभाने वाल कविता का प्रकाशन किया गया है। इसमें अप्रेल 2022 से मार्च 2023 की तिथियों के साथ प्रमुख जैन पर्व, पंचकल्याणक की तिथियाँ, प्रमुख राष्ट्रीय-धार्मिक त्यौहारों का समावेश किया गया है। यह केलेण्डर आजीवन सदस्यों को निःशुल्क प्रेषित किया जायेगा तथा यह केलेण्डर कार्यालय से प्राप्त करने पर निःशुल्क और पोस्ट से मंगाने पर डाक व्यय पर उपलब्ध है। केलेण्डर सम्बन्धी विशेष जानकारी प्राप्त करने के लिये आप **9300642434** पर व्हाट्सएप के माध्यम से संपर्क कर सकते हैं।

शिवपुरी में जिनमंदिर का वार्षिकोत्सव और कीर्ति स्तम्भ विराजमान

समयसार : कहान शताब्दी समारोह वर्ष के अंतर्गत शिवपुरी में स्थित वासुपूज्य जिनालय के नवमे वार्षिकोत्सव के अवसर पर दिनांक 16 जनवरी से 19 जनवरी 2022 तक समयसार कलश मण्डल विधान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के प्रथम दिवस श्री रमेशचंदजी चौधरी परिवार द्वारा ध्वजारोहण, प्रवचनमण्डप उद्‌घाटन श्री विनोदजी विनीतजी पोहरी परिवार द्वारा किया गया। इस अवसर पर प्रातः विधान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर दोनों समय युवा विद्वान डॉ संजीवकुमार गोधा के व्याख्यानों का लाभ प्राप्त हुआ और दोपहर में पण्डित जयकुमारजी कोटा, श्री विराग शास्त्री, पण्डित अशोकजी मांगुलकर राघौगढ़, पण्डित अभिनय शास्त्री के व्याख्यानों का लाभ प्राप्त हुंआ।

प्रतिदिन रात्रि में पूज्य गुरूदेवश्री के प्रवचन और स्वाध्याय के बाद् श्री विराग शास्त्री द्वारा संगीतमय कथा का आयोजन किया गया तथा पाठशाला के बच्चों के द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। कार्यक्रम के अंतिम दिन जिनमंदिर की छत पर पूरे उत्साह से समयसार : कहान कीर्ति स्तम्भ विराजमान किया गया। कार्यक्रम का संयोजन श्री जयकुमारजी जैन द्वारा किया गया। विधान की सम्पूर्ण विधि विधान श्री विराग शास्त्री और पण्डित अभिनय शास्त्री जबलपुर द्वारा करवाये गये।

जबलपुर में मुमुक्षु मण्डल के ट्रस्ट का शपथ ग्रहण समारोह संपन्न

जबलपुर के दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल की नवीन कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह दिनांक 23 जनवरी को पण्डित श्री राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर के गरिमामय सान्निध्य एवं श्री नरेन्द्रकुमारजी, श्री शैलेषजी के मुख्य आतिथ्य में संपन्न हुआ।

इस अवसर पर अध्यक्ष श्री अशोक कुमारजी, मंत्री श्री संजयकुमारजी, उपाध्यक्ष श्री प्रसन्न कुमारजी, कोषाध्यक्ष श्री विमलकुमारजी, सह सचिव श्री सुशील कुमार जी ने शपथ ग्रहण की। तत्पश्चात् श्री रजनीशजी रूपाली, श्री सतीशजी, डॉ. एस.सी. जैन, श्री सुनीलजी पायलवाला ने कार्यकारिणी के सदस्य के रूप में शपथ ली। नये ट्रस्टियों में डॉ. मनोजजी, श्री विराग शास्त्री, ब्र. श्रेणिकजी, श्री चन्द्रकुमारजी, श्रीमति सरिताजी, श्रीमति पूजाजी ने कार्यकारिणी के सदस्य के रूप में शपथ लेते हुये संस्था के विकास के प्रति निरंतर प्रयास करने की प्रतिज्ञा ली।

गुना में समयसार : कीर्ति स्तम्भ विराजमान

समयसार : कहान शताब्दी समारोह वर्ष के अंतर्गत गुना में वर्द्धमान जिनालय में के वार्षिकोत्सव के अवसर पर दिनांक 20 जनवरी से 21 जनवरी 2022 तक विधान के साथ डॉ. संजीव कुमार जी गोधा के व्याख्यानों का लाभ प्राप्त हुआ।

कार्यक्रम के अंतिम दिन जिनमंदिर की ऊपर की वेदी पर समयसार : कहान कीर्ति स्तम्भ विराजमान किया गया। विधान की सम्पूर्ण विधि विधान पण्डित सुकुमालजी शास्त्री, गुना एवं पण्डित अशोकजी मांगुलकर राघौगढ़ द्वारा संपन्न करवाई गई।

होली हो मुनिराजों सी..

रंग बिरंगी होली आई, खुश होते सब बहनें भाई ।
आओ ऐसी होली मनायें, जैसे मुनिराजों ने मनाई ।
करुणा क्षमा का रंग बनायें, मिलकर ज्ञान गुलाल उड़ायें ।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित की पिचकारी हम लेकर आयें ।।
चलों चले जिनमंदिर भाई, रंग बिरंगी होली आई ।
मम्मी ने समझाया हमको, नहीं किसी पर रंग डालना ।
नहीं दीवारें गन्दी करना, नहीं कहीं गुब्बारे मारना ।।
इनसे नहीं कुछ लाभ है भाई, रंग बिरंगी होली आई ।
पानी जितना खर्च करोगे, उतना पाप कमाओगे ।
धर्म भाव की होली खेलो, तो आनंद मनाओगे ।
इसमें ही हम सबकी भलाई, रंग बिरंगी होली आई ।

- विराग शास्त्री

आपका **संबल** हमारा **प्रयास**

हमारी निम्न योजनाओं में सहयोग प्रदान कर जिनशासन प्रभावना में सहयोगी बनें ।

शिरोमणि परम संरक्षक	1,00,000/- रु.
परम संरक्षक	51,000/- रु.
संरक्षक	31,000/- रु.
परम सहायक	21,000/- रु.
सहायक	11,000/- रु.
सहायक सदस्य	5,000/- रु.
सदस्य	1,000/- रु.

प्रत्येक सहयोगी को (सदस्य छोड़कर) चहकती चेतना पत्रिका का आजीवन सदस्य बनाया जायेगा । आप अपनी सहयोग राशि "चहकती चेतना" के नाम से ड्राफ्ट अथवा चैक बनाकर प्रेषित करें अथवा आप **"चहकती चेतना"** के पंजाब नेशनल बैंक, जबलपुर के बचत खाता क्रमांक 1937000101030106 में IFSC : PUNB0193700 जमा कर हमें सूचित कर सकते हैं ।

- कोलकाता निवासी अध्यात्म मूर्ति श्री निहालचंदजी सौगानी के सुपुत्र आत्मार्थी श्री रमेशजी सौगानी ने विद्वान प्रोत्साहन योजना एवं चहकती चेतना के संवर्द्धन हेतु अंतर्गत 6500/- रु. एवं श्रीमति स्वतंत्रदेवी सौगानी ने 6500/- रु. की राशि प्रदान की।
- श्रीमति रचना जैन रांची एवं श्री उत्सव जैन रांची ने 11000/- रु. प्रदान की।

सभी एतदर्थ चहकती चेतना परिवार की ओर से साधुवाद।

जन्मदिवस dh gkfnd शुभकामनायें

जन्म-मरण के अभाव की भावना भाने में ही
जन्म दिन मनाने की सार्थकता है।

जल्दी से भगवान बनो तुम,
अब अपना कल्याणक करो तुम।
जन्म मरण का नाश करो तुम,
सिद्ध शिला पर वास करो तुम।।

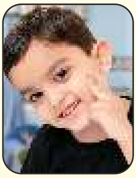

आगम प्यारा नाम है, करना आगम ज्ञान ।
आगम के श्रद्धान से बन जाना भगवान ।।

आगम जैन, कोलकाता 9 अगस्त

जिनधर्म की बेटी हो, हो सीता का नाम।
अटल रहो जिनधर्म में, होवे ऊंचा नाम।।

अपेक्षा जैन, कोलकाता 18 सितम्बर

अक्षत अपना आत्मा, अक्षत अपना धर्म।
अक्षत पद प्राप्ति हो, मिटें सारे कर्म।।

अक्षत जैन, कोलकाता 11 अक्टूबर

जिन ध्वनि है सर्वज्ञ की, करती मंगल काम।
जीवन मंगलमय करे, हो शिवपुर विश्राम।।

ध्वनि जैन, कोलकाता 23 सितम्बर

प्रांजल जैन धर्म मिला, होवे ऐसा काम।
सीता सा धीरज धरो, हो निज में विश्राम।।

प्रांजल जिनेन्द्र जैन, गोरेगांव, मुम्बई - 2 जून

शोक संदेश श्रद्धांजलि

मुम्बई निवासी श्री कनुभाई मूलचंदजी दोशी का दिनांक 21 जनवरी को 79 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आप श्री कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट मुम्बई के महामंत्री श्री बसंतभाई दोशी के छोटे भाई थे और विगत लगभग 12 वर्षों से देवलाली में निवास करते हुये निरंतर स्वाध्याय आदि धार्मिक गतिविधियों में ही संलग्न रहते थे।सदा प्रसन्नमुद्रा में जिनशासन के हर कार्य की अनुमोदना करना उनकी जीवन शैली थी। जीवन के अंतिम क्षण तक वे शरीर के परिणमन से भिन्न आत्मा की निरोगता की चर्चा करते रहे।

राजस्थान के सरदार शहर निवासी श्री अभयकरणजी सेठिया का 9 नवम्बर 2021 को शांत परिणामों से देह परिवर्तन हो गया। आप विगत 30 वर्षों से व्यापार आदि से निवृत्ति लेकर स्वाध्याय, भक्ति, सामायिक, ध्यान, धार्मिक कार्यक्रमों में सहभागिता करते हुये अपने मनुष्यभव को सार्थक कर रहे थे।

आपके परिवार के द्वारा पत्रिका को इस वैराग्य प्रसंग पर 2100/- रुपये की राशि प्राप्त हुई।

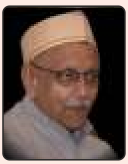

जिनवाणी के सरंक्षण में तल्लीन, पंचपरमागम ग्रन्थों को ताम्रपत्र में उत्कीर्ण कराके देश के अनेक जिनमंदिरों में विराजमान करने वाले आत्मार्थी श्रावक पण्डित मनोज कुमारजी जैन मुजफफनगर का 24 दिसम्बर 2021 को देहविलय हो गया।

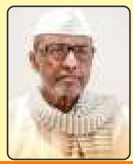

तीर्थधाम मंगलायतन के स्वप्नदृष्टा, दूरगामी सोच के धनी, गहन अध्येता, मुमुक्षु समाज के प्रबल स्तम्भ श्री पवनजी जैन का 12 दिसम्बर को आत्मचिन्तन करते हुये देह विलय हो गया।

मुम्बई निवासी ब्र. विमला बेन रिखबदास जैन का 25 जनवरी को शांत परिणामों से देह विलय हो गया। आपने पूज्य गुरुदेवश्री से ब्रह्मचर्य व्रत अंगीकार किया और जीवन के 55 वर्षों तक सोनगढ़ में रहकर धर्माराधना की। आप दादर, मुम्बई निवासी श्री शांतिभाई-भरतभाई जैन की बड़ी बहन थीं।

सूरत निवासी श्री सुनीलकुमारजी पुत्र श्री धनकुमारजी गोधा का 17 जनवरी को 67 वर्ष की आयु में देह परिवर्तन हो गया। तत्वज्ञान के प्रचार प्रसार में आपका महत्वपूर्ण योगदान रहता था। आपके परिवार की ओर से 2100/- रु. की राशि प्राप्त हुई।

सूरत निवासी श्री सुनीलकुमारजी पुत्र श्री धनकुमारजी गोधा का 17 जनवरी को 67 वर्ष की आयु में देह परिवर्तन हो गया। तत्वज्ञान के प्रचार प्रसार में आपका महत्वपूर्ण योगदान रहता था। आपके परिवार की ओर से 2100/- रु. की राशि प्राप्त हुई।

चहकती चेतना परिवार सभी दिवंगत भव्य आत्माओं के भव विराम की मंगल कामना करता है।

हमारी ऐतिहासिक विरासत

अयोध्या

जैन धर्म के अनुसार अयोध्या ऐतिहासिक और पवित्र नगर है। आज अयोध्या को भगवान राम की जन्म भूमि के नाम से जाना जाता है परन्तु अनादिकाल से 24 तीर्थंकरों का जन्म नियम से अयोध्या में ही होता है। इस अयोध्या में हजारों दिगम्बर जिनमंदिर रहे और मुगल शासकों के काल में हमेशा जैन मंदिरों पर हमले कर उन्हें लूटकर नष्ट किया जाता रहा।

अयोध्या में 1192-93 में भगवान आदिनाथ के प्राचीन मंदिर को अफगान सेनापति शाहबुद्दीन मोहम्मद गौरी के छोटे भाई मखदूम शाह जुरण गोरी ने आक्रमण कर तोड़ा।

उत्तरप्रदेश के पुरातत्व विभाग के फैजाबाद अयोध्या के सरकारी गजट में और पुरातत्व विभाग के सर्वेक्षण में उल्लेख किया गया है कि अयोध्या में सैकड़ों वर्ष पुराने दिगम्बर जैन मंदिर के प्रमाण प्राप्त हुये हैं।

1960 के फैजाबाद प्रशासन के गजट के पेज़ 353 और 355 में उल्लेख है कि अयोध्या में 1724 में नबाब सुजाद्दौलाह के खंजाची कैशियर केसरी सिंह ने भगवान आदिनाथ, भगवान अजितनाथ, भगवान अभिनंदननाथ के मंदिर स्थापित करवाये थे।

भगवान आदिनाथ को मुगल शासक ने तोड़ दिया और वहाँ जुरण शाह की कब्र बनाई गई। वर्तमान में इसे जुरण का टीला कहा जाता है।

किशोर कुणाल द्वारा लिखित पुस्तक के पेज नं. 473 में प्रकाशित जानकारी के अनुसार शाह जुरण द्वारा 1192-93 में अयोध्या में बड़ी सेना के साथ आक्रमण किया गया और एकमात्र आदिनाथ मंदिर को तोड़ दिया गया। अयोध्या के उस समय राजा गहदवाला के मुख्य बर्तुह द्वारा तबकात-इ-नसीरी में जुरण और उसके एक लाख बीस हजार सैनिकों के मारे जाने का उल्लेख किया है।

महाराष्ट्र के कोंकण में आज से लगभग 1000 वर्ष पूर्व जैन धर्म का बहुत प्रभाव था। यहाँ शिलाहार राजाओं ने शासन किया, उनके राज्य में अधिकांश प्रजा भी जैन थी इसलिये अनेक जैन मंदिरों का निर्माण भी हुआ। आज कोंकण के कई गांवों में जैन मंदिर होने के प्रमाण मिलते हैं। परन्तु आज वहाँ मांसाहारी भोजन किया जाता है। कोंकण की तहसील मालवण के एक गांव पेंडूर में अभी भी बड़ी संख्या में तीर्थंकर की प्रतिमा, दिगम्बर मुनिराजों के ठहरने का स्थान, यक्ष, जिनमंदिर के प्रमाण अभी भी उपलब्ध हैं।

विभिन्न स्थानों में हुये कार्यक्रमों की
झलकियाँ

चहकती चेतना

विभिन्न स्थानों में हुये कार्यक्रमों की
झलकियाँ

चहकती चेतना का अगला अंक
प्रतिभा विशेषांक के रूप में

विगत 15 वर्षो से लगातार प्रकाशित हो रही जैन समाज की लोकप्रिय पत्रिका चहकती चेतना का अगला अंक प्रतिभा विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जायेगा। इसमें जैन समाज के 3 साल से 18 साल तक के प्रतिभाशाली बच्चों के परिचय उनकी प्रतिभा के साथ प्रकाशित किया जायेगा। धार्मिक रूप से सक्रिय बच्चों को प्रथम अवसर दिया जायेगा। यदि आपके यहाँ कोई प्रतिभाशाली बालक-बालिका हो तो उसका नाम इसमें अवश्य प्रकाशित करायें। धार्मिक रूप से कंठपाठ करने वाले, आचरण में विशेष बात, पूजन, स्वाध्याय आदि में विशेष रुचिवान, कारोना काल की विशेष उपलब्धि, लौकिक क्षेत्र में विशेष उपलब्धि हो तो आप प्रतिभा विवरण के साथ, बच्चे की सुन्दर फोटो, बच्चे का नाम, पिता का नाम, उम्र आदि हमें **jindeshna1008@gmail.com** ईमेल पर भेजें।

प्रकाशन सहयोग के लिये 9300642434 पर संपर्क करें ।

पूज्य श्री कानजी स्वामी स्मारक ट्रस्ट

वर्ष के स्थायी उत्सव :

- आसो दीपावली - भगवान महावीर निर्वाणोत्सव विधान - शिविर (5 दिन)
- भाद्रपद - दशलक्षण पर्व (10 दिन)
- कार्तिक अष्टान्हिका विधान - व्याख्यानमाला - शिविर (8 दिन)
- दिसम्बर - विधान - शिविर (5 दिन)
- फाल्गुन अष्टान्हिका विधान - व्याख्यानमाला - शिविर (8 दिन)
- आषाढ़ अष्टान्हिका विधान - शिविर (9 दिन)
- पू. कहान गुरुदेवश्री का जन्म जयंती महोत्सव (5 दिन)
- बाल शिक्षिण शिविर (8 दिन)
- करणानुयोग शिविर (वर्ष में दो बार)

कहान नगर, लामरोड, देवलाली (नासिक)-422401, फोन : 0253-2491044/45, ईमेल-1987guruprasad@gmail.com
प्रधान कार्यालय - पूज्य श्री कानजी स्वामी स्मारक ट्रस्ट, 173-175, मुम्बादेवी रोड, मुंबई - 400 002 फोन : 23425241, 23446099
देवलाली के सभी कार्यक्रमों का लाईव टेलीकॉस्ट देवलाली वेबसाईट - **www.guruprasaddevlali.com**